RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-03
Issue-12
December-2018

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com [UGC Listed Journal]

आदिकालीन हिन्दी साहित्य : प्रमुख एवं गौण रचनाएँ

मगन परमार

शोध अध्येता, हिन्दी विभाग, भाषा-साहित्य भवन, गुजरात युनिवर्सिटी, अहमदाबाद

हिन्दी साहित्य के इतिहास को प्रमुख रुप से चार कालखंडों में बाँटा गया है; आदिकाल, भक्तिकाल, रीतिकाल और आधुनिककाल। हिन्दी साहित्य के आदिकाल की समय-सीमा सं. 1050 से लेकर सं. 1375 तक मानी गयी है। इस समय के दौरान हिन्दी साहित्य में कई प्रमुख एवं गौण रचनाएँ सामने आती है। आदिकाल की रचनाओं में विषय के रुप में प्रमुख रुप से किसी राजा या किसी धर्म एवं किसी तत्कालीन सामाजिक स्थिति को प्रकट किया गया हैं। इस प्रकार इस काल की रचनाएँ राज्याश्रित, धर्माश्रित एवं लोकाश्रित थीं। राज्याश्रित रचनाएँ ज्यादातर वीरगाथाओं के रुप में सामने आती हैं। धर्माश्रित रचनाएँ प्रमुख रुप से पश्चिम में जैन धर्म के आश्रय में और पूर्व में बौद्ध धर्म के सिद्धों-नाथों के आश्रय में सामने आई। बौद्ध धर्म की वज्रयान शाखा से सिद्ध संप्रदाय और सहजयान शाखा से नाथ संप्रदाय का विकास हुआ था। कुछ जैन आचार्य एवं सिद्धों ने लोकाश्रित भाषा में भी साहित्य रचनाएँ की। संपूर्ण आदिकालीन हिन्दी साहित्य रचनाओं को प्रमुख रुप से इन विभागों में बाँटा जा सकता है; सिद्ध साहित्य, नाथ साहित्य, जैन साहित्य, रासो साहित्य, लौकिक साहित्य एवं गद्य साहित्य।

बौद्ध धर्म की वज्रयान शाखा के प्रचार हेतु सिद्धों ने जनभाषा में साहित्य रचा। सिद्धों की संख्या 84 बताई जाती है, लेकिन आदिकाल में 14 सिद्धों की ही रचनाएँ उपलब्ध है। इनमें सरहपा, शबरपा, लुइपा, डोम्भिपा, विरुपा, कण्हपा एवं कुक्कुरिपा प्रसिद्ध हैं। सरहपा के रचित ग्रंथों की संख्या 32 मानी गयी हैं, जिनमें 'दोहाकोश' सर्वाधिक प्रसिद्ध है। शबरों के समान जीवन जीनेवाले शबरपा की प्रसिद्ध रचना 'चर्यापद'(अनुष्ठान गीत) है। डोम्भिपा के ग्रंथों की संख्या 21 बतायी जाती हैं, जिनमें 'डोम्बि-गीतिका', 'योगचर्या', 'अक्षरद्विकोपदेश' महत्वपूर्ण है। कण्हपा के रचित ग्रंथों की संख्या 74 मानी जाती हैं। कुक्कुरिपा के रचित ग्रंथों की संख्या 16 मानी जाती हैं। सिद्ध साहित्य की इन रचनाओं में निरसता और रूखापन, भावों की तीव्रता, अछूतोद्धार की भावना, लोकप्रचार के आदर्श का अभाव, गीतात्मकता और भाषा-वैविध्य आदि विशेषताएँ पायी जाती हैं।

नाथ संप्रदाय के संतों का साहित्य नाथ साहित्य माना जाता हैं। इस साहित्य का क्षेत्र मध्य देश का पश्चिमोत्तर भाग माना जाता है। नाथों की संख्या नौ मानी जाती है। गुरु गोरखनाथ इस संप्रदाय के प्रवर्तक है। गोरखनाथ के कुल 40 ग्रंथ बताए गए हैं, लेकिन 14 ही उपलब्ध है। उनकी रचनाओं का संकलन डॉ. पीताम्बरदत्त बड़थ्वाल ने 'गोरखबानी' नाम से किया है। गोरखनाथ के पद बहुत पुराने और गोरक्ष-कथित भी माने जाते है। विजयेन्द्र स्नातक के मत से "इन पदों में कई कबीर के नाम से, कई नानक के और दादू दयाल के नाम से भी पाये गये हैं। कुछ पद लोकोक्ति का रुप धारण कर चुके हैं, कुछ का जोगिड़ा के रुप में व्यवहार होता है और कुछ लोक में अनुभव सिद्ध ज्ञान के रुप में चल पड़े हैं।"[(1)] समन्वय की भावना, रूखा साहित्य, गुरु महिमा, भक्ति की प्रवृत्ति, निवृत्ति मार्ग, मर्यादा रक्षण, इन्द्रिय-निग्रह, प्राण-साधना और मनःसाधना नाथ साहित्य की प्रमुख विशेषताएँ हैं।

आदिकालीन हिन्दी जैन-साहित्य का विस्तार उत्तर भारत से राजस्थान और गुजरात के सौराष्ट्र तक पाया जाता है। इस साहित्य में प्रमुख रुप से तीर्थंकरों के जीवन-चरित की कथाएँ रास नाम से प्राप्त होती है। देवसेन का 'श्रावकाचार' और शालिभद्र सूरि का 'भरतेश्वर बाहुबली रास' जैन साहित्य की प्रमुख रचनाएँ हैं। देवसेन आदिकालीन हिन्दी जैन-साहित्य के प्रमुख कवि है। 'श्रावकाचार', 'लघुनयचक्र', 'दर्शनसार' और 'दुब्ब-सहाव-प्यास' उनकी रचनाएँ हैं। 'श्रावकाचार' में 250 दोहों में श्रावक-धर्म का वर्णन किया गया हैं। इसमें गृहस्थ के कर्तव्यों पर भी विचार किया गया हैं। ये दोहा छंद में रचा गया है। इसकी रचना 933 ई. में हुई थी। 'भरतेश्वर बाहुबली रास' खण्डकाव्य है और रास-परंपरा का प्रथम ग्रंथ माना जाता

© RRIJM 2015, All Rights Reserved

है। इसकी रचना शालिभद्र सूरि ने की थी। यह ग्रंथ 1184 ई. में रचा गया है। इसमें भरतेश्वर और बाहुबली का चरित्र वर्णित है। इसके अलावा जैन साहित्य में शालिभद्र सूरि का 'बुद्धिरास', पुष्पदंत का 'महापुराण', स्वयंभू का 'पउमचरिउ', 'स्वयंभू छंद' और 'रिट्ठणेमि चरिउ', धनपाल का 'भविसयत्तकहा', आसगु कवि का 'चन्दनबाला रास', जिनधर्म सूरि का 'स्थूलिभद्र रास', विजयसेन सूरि का 'रेवंतगिरि रास', जिनदत्त सूरि का 'उपदेश रसायन रास', सोमप्रभ सूरि का 'कुमारपाल प्रतिबोध' आदि गौण रचनाएँ हैं। 'चन्दनबाला रास' की रचना आसगु कवि ने 1200 ई. में की थी। यह एक लघु खंडकाव्य है, जिसमें केवल पैंतीस छंद है। इसमें चंपा नगरी के राजा दधिवाहन की पुत्री चन्दनबाला की कहानी है। 'रेवंतगिरि रास' की रचना विजयसेन सूरि ने 1231 ई. में की थी। इसमें तीर्थंकर नेमिनाथ की प्रतिमा और रेवंतगिरि तीर्थ का वर्णन हैं। इसकी कथा यात्रा तथा मूर्ति-स्थापना की घटनाओं पर निर्मित हैं। इसमें वास्तुकला के सौंदर्य के भी दर्शन होते है।

रासो-काव्य परंपरा अपभ्रंश से गुजराती में, गुजराती से राजस्थानी में और राजस्थानी से हिन्दी में आई। रासो-काव्य चरित्र प्रधान होते है, पर उनके कथानक एवं शैली में भिन्नता द्रष्टिगोचर होती हैं। रासो-काव्य परंपरा का 'पृथ्वीराज रासो' हिन्दी साहित्य का आदि ग्रंथ माना जाता है। 'पृथ्वीराज रासो' के चार संस्करण उपलब्ध है। नागरी प्रचारिणी सभा, काशी द्वारा प्रकाशित संस्करण सबसे बड़ा है, उसमें 69 समय या खण्ड है। यह हिन्दी का प्रथम महाकाव्य माना जाता है। इसके रचयिता पृथ्वीराज चौहान के मित्र एवं दरबारी कवि चंदबरदाई है। यह एक वीर रस प्रधान रचना है, जिसमें चंदबरदाई ने अपने आश्रयदाता पृथ्वीराज चौहान की वीरता का वर्णन किया है। इसकी कथा का वर्णन शुक-शुकी के द्वारा किया गया है। कयमास वध इसकी कथा की मुख्य घटना है। वीरगीत के रुप में सबसे पुरानी रचना 'बीसलदेव रासो' आदिकाल की श्रेष्ठ काव्यकृति मानी जाती है। इसके रचयिता नरपति नाल्ह है। पाठानुसार इसकी रचना सं. 1212 यानि कि 1155 ई. में हुई थी। इसमें भोज परमार की पुत्री राजमती और अजमेर के राजा बीसलदेव तृतीय की प्रेम-कहानी का वर्णन किया गया हैं। इसमें वीरता के साथ श्रृंगार परंपरा का भी वर्णन किया गया है। हिन्दी काव्य में प्रयुक्त होने वाले बारहमासा का वर्णन सबसे पहले 'बीसलदेव रासो' में मिलता है। 'संदेश रासक' रासो-काव्य परंपरा की सर्वाधिक प्रामाणिक रचना मानी जाती है। इसके रचनाकार अब्दुल रहमान है। इसमें पोषितपतिका नायिका मुल्तान जा रहे कोई पथिक के हाथों अपने प्रवासी पति को संदेशा भिजवाती है। 'खुमाण रासो' कुछ संदिग्धताओं के बावजूद 9वीं शताब्दी की रचना मानी जाती है। इसमें चितौड़ नरेश खुमाण के जीवन-चरित्र के साथ-साथ परवर्ती महाराज प्रतापसिंह तक का वर्णन मिलता है। इसके रचयिता खुमाण के दरबारी कवि दलपति विजय माने जाते है। इसमें पाँच सहस्र छंद है। 'परमाल रासो' के रचयिता महोबा के राजा परमार्दि देव के आश्रित कवि जगनिक माने जाते हैं। इसमें आल्हा और ऊदल नामक दो वीर सरदारों की वीरतापूर्ण लड़ाइयों का वर्णन किया गया हैं। उत्तर भारत में यह 'आल्हा खण्ड' के नाम से भी जाना जाता है। 'हमीर रासो' मूल रुप में उपलब्ध नहीं है, प्राकृत-पैंगलम में इसके कुछ छंद मिलते है। शारंगधर इसके रचयिता माने जाते है। इन रासो साहित्य रचनाओं में आश्रयदाताओं का गुणगान तथा शत्रुओं की हीनता का चित्रण, इतिहास की उपेक्षा, युद्धों का सजीव वर्णन, वीर एवं शृंगार रस का चित्रण, रूढ़ियों का पालन आदि विशेषताएँ पायी जाती हैं।

आदिकालीन हिन्दी लौकिक-साहित्य में अमीर खुशरो की पहेलियाँ और मुकरिया, विद्यापति की पदावली तथा कवि कल्लोल का 'ढोला-मारू रा दूहा' महत्वपूर्ण रचनाएँ हैं। 'खालिकबारी' और 'दो सुखने' अमीर खुशरो की अन्य रचनाएँ हैं। वे खड़ी बोली को काव्य-भाषा बनानेवाले प्रथम कवि है। शृंगार और मनोरंजन एवं नीति का निरुपण लौकिक साहित्य की प्रमुख विशेषता हैं।

आदिकालीन हिन्दी गद्य-साहित्य में रोड़ा कवि का चम्पूकाव्य 'राउलवेल', ज्योतिरीश्वर ठाकुर का 'वर्णरत्नाकर' और दामोदर शर्मा का 'उक्ति-व्यक्ति-प्रकरण' प्राप्त होता हैं। 'वर्णरत्नाकर' डॉ. सुनीतिकुमार चटर्जी और पंडित बबुआ मिश्र के संपादन में बंगाल एशियाटिक सोसाइटी से प्रकाशित हुआ था। यह 14वीं शताब्दी की रचना मानी जाती है। आलंकारिक एवं कवित्वपूर्ण भाषा में रचित इस ग्रंथ में तत्सम शब्दों की प्रधानता हैं। अपभ्रंश की उत्तरकालीन अवस्था अथवा परवर्ती रुप को अवहट्ठ कहा जाता है। इस 'अवहट्ठ' शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग 'वर्णरत्नाकर' में मिलता है। 'उक्ति-व्यक्ति-प्रकरण' अवधी भाषा में लिखा गया है।

© RRIJM 2015, All Rights Reserved

इस प्रकार, आदिकालीन हिन्दी साहित्य प्रमुख रुप से सिद्ध साहित्य, नाथ साहित्य, जैन साहित्य, रासो साहित्य, लौकिक साहित्य एवं गद्य साहित्य के रुप में पाया जाता है। सिद्ध साहित्य में सरहपा का 'दोहाकोश' और शबरपा का 'चर्यापद' तथा नाथ साहित्य में गोरखनाथ की 'गोरखबानी' प्रमुख रचनाएँ हैं। जैन साहित्य में 'श्रावकाचार' और 'भरतेश्वर बाहुबली रास', रासो साहित्य में 'पृथ्वीराज रासो', 'बीसलदेव रासो' और 'संदेश रासक' तथा लौकिक साहित्य में अमीर खुशरो की पहेलियाँ और मुकरिया, विद्यापति की पदावली तथा 'ढोला-मारू रा दूहा' महत्वपूर्ण रचनाएँ हैं। आदिकालीन हिन्दी साहित्य में गौण रचनाएँ भी बड़ी मात्रा में पायी जाती हैं।

संदर्भ-ग्रंथ सूची :

1) हिन्दी साहित्य का इतिहास- विजयेन्द्र स्नातक, साहित्य अकादमी प्रकाशन-2009, पृ.-21

© RRIJM 2015, All Rights Reserved